भाषा

* भाषा का अर्थ :-

→ भूमिका :- भाषा का इतिहास उतना ही पुराना है जितना पुराना मानव का इतिहास। भाषा के लिए सामान्यतः यह कहा जाता है कि भाषा मनुष्य के विचार, विनिमय और भावों की अभिव्यक्ति का साधन है।

→ भाषा का अर्थ :- भाषा संस्कृत की भाष् धातु से उत्पन्न हुआ है इसका अर्थ है - बोलना।
प्लेटो के अनुसार "विचार- आत्मा की मूक बातचीत है जब वह होठों पर ध्वन्यात्मक होकर प्रकट होती है तो उसे भाषा की संज्ञा देते हैं।"

→ भाषा की परिभाषा :- ब्लॉक और ट्रेगर के अनुसार "भाषा व्यक्त ध्वनि चिह्नों की उस पद्धति को कहते है जिसके माध्यम से समाज, समूह परस्पर व्यवहार करते हैं।"

डॉ० श्यामसुंदर दास के अनुसार "मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मतों का आदान-प्रदान करने के लिए व्यक्त ध्वनि संकेतों का जो व्यवहार होता है उसे भाषा कहते हैं।"

स्पष्ट है कि भाषा मानव मुख से निकली हुई सार्थक ध्वनि संकेतों का समष्टिगत रूप है। भाषा एक विज्ञान है, एक सामाजिक क्रिया है। वक्ता और श्रोता के बीच विचार - विनिमय का साधन है इस आधार पर भाषा मानव मुख से निकली हुई सार्थक ध्वनियों का समूह है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

* **भाषा के रूप :—**

भाषा के दो रूप होते है :—
i) मौखिक भाषा
ii) लिखित भाषा

मौखिक भाषा :— अपने विचार व्यक्त करने के लिए भाषा के जिस रूप का हम प्रयोग करते है अथवा दूसरो के विचार अथवा भाव सुनकर ग्रहण करते है उसे मौखिक भाषा कहते है। प्रारंभ मे मनुष्य ने मौखिक भाषा का ही विकास किया था। तब वह अपनी जाति के समस्त अनुभवों एवं विचारो को मौखिक रूप से ही एक पीढी से दूसरी पीढी को हस्तांतरित करते थे।

लिखित भाषा :— भाषा के जिस रूप से हम अपने विचार एवं भाव लिखकर प्रकट करते है अथवा दूसरो के विचार अथवा भाव पढकर ग्रहण करते है उसे लिखित भाषा कहते है। लिपि का वरदान पाकर मौखिक भाषा ने लिखित भाषा का रूप धारण किया। किसी भी मानव समाज का इतिहास, उसके विचार, उसका ज्ञान - विज्ञान एवं उसकी आकांक्षाएँ सभी कुछ लिखित भाषा के माध्यम से सुरक्षित रहता है।

* **भाषा के मूल आधार :—**

मानव जीवन में सबसे अधिक महत्व भाषा को दिया जाता है उसने जो भी विकास किया है, ज्ञान - विज्ञान के क्षेत्र में जो प्रगति की है वह भाषा के माध्यम से की है भाषा के मूल आधारों को भाषा वैज्ञानिकों ने दो वर्गो मे विभाजित किया है :—

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

i) भाषा का भौतिक आधार
ii) भाषा का मानसिक आधार

i) **भाषा का भौतिक आधार :—**

भाषा के भौतिक आधार के अंतर्गत भाषा के मूल तत्व जैसे :— शब्द, अक्षर, वाक्य, लिपि एवं विराम चिह्न आते हैं ध्वनियों को उच्चारित करने वाले अंग जैसे :— फेफड़े, कंठ, मुख विवर और नाक आते हैं। ध्वनियों को सुनने वाला अंग कान आता है। ध्वनि संकेतों को धारण करने वाली सामग्री जैसे :— तख्ती, स्लेट एवं कागज आदि आते हैं। ध्वनियों को लेखबद्ध करने वाली सामग्री कलम और स्याही और लेखबद्ध भाषा का पठन करने वाले अंग जैसे :— आँख, फेफड़े, कंठ, मुख विवर और नाक आदि आते हैं। हम जानते हैं कि किसी भी मानव समाज में उसकी भाषा का विकास सामाजिक अंतःक्रिया द्वारा हुआ है।

ii) **भाषा का मानसिक आधार :—**

भाषा अपने विचार व्यक्त करने का सांकेतिक साधन है। मनुष्य के मन के विचार, मन के भाव आदि उसकी भाषा के मूल आधार होते हैं और मनुष्य के मन के विचारों एवं मन के भावों का सम्बंध मन मस्तिष्क से होता है इसलिए इन्हें भाषा के मानसिक आधार कहा जाता है। यदि ध्यानपूर्वक सोचा समझा जाए तो यह स्पष्ट है कि भाषा के भौतिक आधार भी भाषा के मानसिक आधार पर निर्भर करते हैं। भाषा के सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने की क्रिया तब तक शुरु नहीं होती जब

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

तक मनुष्य का मस्तिष्क इसके लिए तैयार नहीं होता हमारी समस्त क्रियाएँ एवं ज्ञानेन्द्रियाँ मन, मस्तिष्क से ही संचालित होती हैं। मन, मस्तिष्क, मनोवेग, और विचार ये सब भाषा के मानसिक विचार हैं इनमें से किसी के अभाव में भी भाषा के अस्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती।

* **भाषा की प्रकृति:—** जब हम भाषा की बात करते हैं तो हमारा तात्पर्य केवल मनुष्य की भाषाओं से होता है और वह भी ध्वनि संकेतों की उस भाषा से जो लिपि का वरदान पाकर लिखित रूप धारण करती है। मानव समाज में रहकर सामाजिक अंतःक्रिया द्वारा सीखता, सीखाता है। और इस भाषा की विशेषता यह है कि इसमें सदैव परिवर्तन एवं विकास होता रहता है मनुष्य की भाषा की यही प्रकृति है। भाषा की इस प्रकृति को हम निम्नलिखित बिंदुओं से व्यक्त कर सकते हैं:—

① भाषा मानव की विशेषता है।
② भाषा विचार-विनिमय हेतु समाज द्वारा स्वीकृत ध्वनि संकेतों का समूह है।
③ भाषा और विचार में अटूट सम्बंध होते हैं।
④ भाषा लिपि संकेतों के द्वारा धारण एक लिखित रूप है।
⑤ भाषा अर्जित सम्पत्ति है।
⑥ भाषा में परिवर्तनशील एवं विकासशील होती है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

भाषा का महत्व :— मनुष्य ने ज्ञान - विज्ञान के क्षेत्र में जो भी विकास एवं प्रगति की है उसका श्रेय भाषा को ही जाता है। इस दृष्टि से मानव जीवन में भाषा का महत्व सबसे अधिक है। जो समाज के विकास की मूल आधारशिला है।

i) **भाषा मानव विकास का मूल आधार है :—** भाषा की शक्ति के माध्यम से ही मनुष्य प्रगति के पथ पर अग्रसर हुआ है वैसे तो संसार के सभी प्राणियों के पास अपनी भाषाएँ है परंतु विचार प्रधान भाषा केवल मनुष्य के पास है इसलिए भाषा मानव के विकास का मूल आधार है।

ii) **भाषा विचार विनिमय का साधन है :—** मन के भाव की अभिव्यक्ति के प्रयत्न ने भाषा को जन्म दिया। जिसके माध्यम से मानव अपने विचारो अपने सुख - दुख को एक-दूसरे व्यक्ति से कहता व सुनता है। इसी भाषा के माध्यम से आज मनुष्य अपने भावाभिव्यक्ति के साथ-साथ विचार - विनिमय भी करता रहता है।

iii) **भाषा मानव सभ्यता एवं संस्कृति की पहचान है :—** भाषा जैसे -2 मानव समाज ने अपनी भाषा में प्रगति की है वैसे -2 उनकी सभ्यता एवं संस्कृति में निरंतर विकास हुआ है। ज्ञान - विज्ञान और श्रेष्ठ साहित्य का सर्जन हुआ। कभी -2 किसी जाति समाज व राष्ट्र की सभ्यता एवं संस्कृति का आकलन उसके साहित्य से किया जाता है। आदिकाल में भारत जगतगुरु था इसका प्रमाण उस समय के

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

साहित्य, पुराण और उपनिषद व स्मृतियों में है।

iv) भाषा ज्ञान प्राप्ति का प्रमुख साधन है:— भाषा के माध्यम से ही पुरानी पीढ़ी नई पीढ़ी को सामाजिक विरासत के रूप में अब तक का समस्त संक्षिप्त ज्ञान भावी पीढ़ी को सौंपती है। और यह क्रम निरंतर चलता रहता है तथा भाषा का विकास होता रहता है।

v) विचार शक्ति का विकास:— भाषा के बिना विचारों को याद रखना असंभव है व मनन शक्ति और चिंतन शक्ति का विकास भी असंभव है।

vi) भाषा मानव के विचार, भाव, अनुभव एवं आकांक्षाओं को सुरक्षित रखती है:— भाषा के माध्यम से हम अपने विचारों भावों एवं अनुभवों को सुरक्षित रख सकते है प्रत्येक आने वाली पीढ़ी इसमें अपने भाव विचार एवं अनुभव आदि को जोड़कर अपने से आगे की पीढ़ी को हस्तांतरित करती है भाषा के अभाव में यह सब असंभव है।

निष्कर्ष:— उपरोक्त विवरण के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे है कि भाषा हमारे जीवन की सबसे महत्वपूर्ण आधार है। भाषा से हमें पहचाना जा सकता है और भाषा हर इंसान को एक-दूसरे से जोड़ती है। चाहे वह किसी भी देश या प्रांत में रह रहे हो। मनुष्य ने हर क्षेत्र में चाहे वो ज्ञान-विज्ञान का क्षेत्र हो उसका विकास व

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

प्रगति का श्रेय भाषा को ही जाता है।

~~भाषा का सामा~~

→ भाषा का सामाजिक जीवन में महत्व :—

भूमिका :— भाषा और समाज को एक-दूसरे के पूरक के रूप में माना जाता है। शिक्षा के बिना मनुष्य को पशु के समान माना जाता है। भाषा के बिना मनुष्य के अस्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती। भाषा का अविष्कार और विकास वस्तुतः मनुष्य के व्यक्तित्व और सामाजिक जीवन में भाषा के महत्व को हम निम्नलिखित बिंदुओं से प्रस्तुत कर सकते हैं

1. व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक।
2. ज्ञान प्राप्ति का मुख्य साधन।
3. विचार-विनिमय का सरलतम साधन
4. शिक्षा की प्रगति की आधारशिला।
5. साहित्य कला, संस्कृति व सभ्यता का विकास।
6. चिंतन व मनन का साधन।
7. भाषा और राष्ट्र।
8. सामाजिक जीवन में भाषा।

(1) व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक :— भाषा व्यक्तित्व के विकास का महत्वपूर्ण कारक है। व्यक्ति अपने अंतरमन को भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करना चाहता है तथा इसी अभिव्यक्ति के साथ उसके अंदर छिपी अंततः शक्ति बाहर आती है। जिसकी अभिव्यक्ति जितनी स्पष्ट होगी उसके व्यक्तित्व का विकास भी ~~उस~~ उतने प्रभावशाली ढंग से होगा। यही कारण है कि मुख्य मुखर व्यक्तित्व का व्यक्ति अधिक आदर का पात्र बनता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(3) ज्ञान प्राप्ति का मुख्य साधन :— भाषा के माध्यम से ही पुरानी पीढ़ी सामाजिक विरासत के रूप मे समस्त संचित ज्ञान नई पीढ़ी को सौंपती है। भाषा के माध्यम से ही हम आत्मा को और विश्व को, पुरातन को और नवीन को पहचानने में समर्थ सिद्ध होते है।

(4) विचार - विनिमय का सरलतम साधन :— मनुष्य जन्म के कुछ समय के पश्चात ही अपनी प्रथम पाठशाला अर्थात परिवार मे रहकर भाषा सीखने लगता है। यह भाषा वह स्वभाविक रूप से सीख लेता है। भाषा इसे सीखने के लिए किसी शिक्षक की आवश्यकता नही पड़ती। यह विचार - विनिमय का सरल और सभ्य माध्यम है।

(5) शिक्षा की प्रगति की आधारशिला :— भाषा शिक्षा का आधार ही है समस्त ज्ञान - विज्ञान के ग्रंथ भाषा मे लिपिबद्ध होते है। यदि भाषा न होती तो शिक्षा यह स्वरूप भी निर्मित नहीं होता और यदि शिक्षा की व्यवस्था न होती तो मानव असभ्य और जंगली होता। भाषा के अभाव मे हमे पुर्वजो द्वारा उपलब्ध ज्ञान कभी प्राप्त नही होता।

(6) साहित्य कला, संस्कृति एवं सभ्यता का विकास :— साहित्य भाषा मे लिखा जाता है। भाषा का विकास उसके फलस्वरूप साहित्य के दर्पण मे देखा जाता है इसी प्रकार कला मे स्वर भी भाषा में मुखरित होते है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

वायुमंडल मे जब स्वर गूँजते है तो श्रोताओं को गद्गद् बना देते है। यह चमत्कार भाषा का ही होता है।

मर्टो रूपाई ने भी कहा है कि "भाषा की कहानी वास्तव मे सभ्यता की कहानी है।"

(6) चिंतन एवं मनन का साधन :— भाषा विचारो की सृजन शक्ति का माध्यम है हम भाषा मे ही विचार, चिंतन और मनन करते है विचारो की ऊँचाइयो के कारण मानव आज विभिन्न ग्रहो की जानकारी लेने मे निरंतर सफलताएँ अर्जित कर रहा है। स्पष्ट है कि विचार, चिंतन और मनन शक्तियो का विकास भाषा पर ही आधारित है।

~~(7) भाषा और राष्ट्र :-~~

(7) सामाजिक जीवन मे भाषा :— जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति मे एक भाषा होती है उसी प्रकार एक समुदाय की भी भाषा होती है। समाज की भाषा उसके सदस्यो के विचारो मूल्यो और दृष्टिकोणो को अभिव्यक्त करती है। लोगो का एक समूह जो किसी भाषा को अपनी आवश्यकताओ के अनुसार साझा करता है वह भाषा समुदाय कहलाता है।

भाषा समुदाय व्यक्तियो के आवश्यकताओं और रुचियो के अनुसार होते है जैसे :— स्कूल, क्लब, खेल, मैदान आदि। हमारी सामाजिक पहचान और समाज मे हमारी भूमिकाएँ उस समूह या समुदाय के द्वारा निर्धारित होती है। जब हम कोई भाषा बोलते है तो वह हमारी विशिष्ट पहचान का प्रतिनिधित्व करती है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

भाषाओं का वर्गीकरण :—

भूमिका :- संसार में हजारों भाषाओं का विकास हुआ है भाषा का अविष्कार और विकास वास्तव में मनुष्य का विकास है। इन सब भाषाओं को विद्वानों ने अनेक रूपों में वर्गीकृत किया है। कुछ मुख्य वर्गीकरण प्रस्तुत है। कुछ विद्वानों ने संसार की समस्त भाषाओं को केवल दो वर्गों में विभाजित किया है :—

मातृभाषा और मातेतर भाषा

- **मातृभाषा** :- वह भाषा जिसे कोई व्यक्ति जन्म के बाद अपनी माँ एवं संपर्क में आने वाले अन्य व्यक्तियों का अनुकरण करके सीखता है उसे उस व्यक्ति की मातृभाषा कहते है। इसको ~~प्रथ~~ प्रथम भाषा भी कह सकते है।

जैसे :- हिंदी भाषा भाषियों की मातृभाषा अथवा प्रथम भाषा हिंदी है, तेलगू भाषा-भाषियों को तेलगू है और अंग्रेजी भाषा-भाषियों की अंग्रेज है।

मातेतर भाषा :- किसी व्यक्ति की मातृभाषा से भिन्न भाषाएँ जिन्हे वह प्रयत्नों से सीखता है। उसके लिए मातेतर भाषाएँ होती है। मातेतर भाषाओं को कोई भी व्यक्ति मातेतर भाषाओं के बाद सीखता है इसलिए इन्हे द्वितीय भाषा भी कहते है।

जैसे :- हिंदी मातृभाषी व्यक्तियो के लिए संस्कृत, गुजराती, मराठी, कन्नड़, तेलगू, अंग्रेजी, जर्मन आदि सभी मातेतर भाषाएँ है इसी प्रकार अंग्रेजी मातृभाषा व्यक्तियों के लिए अंग्रेजी को

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

छोड़कर सभी भाषाएँ मातेतर भाषाएँ है।

सगोत्रीय तथा विषमगोत्रीय भाषा :-
भाषा विशेषज्ञो ने भाषा भाषाओं का विभाजन उनके मूल स्रोतो के आधार पर किया है। उनकी दृष्टि से किसी एक मूल भाषा से निकलने वाली भाषाएँ सगोत्रीय होती है इस प्रकार भाषाओ के जितने मूल स्रोत होते है उतने ही उनके सगोत्रीय वर्ग है।

सगोत्रीय भाषा :- एक ही भाषा परिवार की भाषाओं को सगोत्रीय भाषाएँ कहते है क्योंकि इन भाषाओ का मूल स्रोत कोई एक भाषा होती है।
जैसे :- हिंदी, सिंधी, पंजाबी, गुजराती, मराठी, उड़िया, बंगाली तथा नेपालियो सब आर्य भाषा परिवार की भाषाएँ है इन सबका मूल स्रोत वैदिक संस्कृत भी है।
इसलिए ये सब समगोत्रीय भाषाएँ है। इसी प्रकार द्रविड़ भाषा परिवार की समस्त भाषाएँ :- तामिल, मलयालम, तेलगू और कन्नड सगोत्रीय भाषाएँ है।

विषमगोत्रीय भाषा :- एक गोत्रीय भाषाओ के लिए दूसरी गोत्रीय भाषाएँ विषम गोत्रीय कही जाती है। इन भाषाओ का मूल स्रोत भिन्न-2 भाषाएँ होती है। इसलिए इन्हे विषम गोत्रीय भाषाएँ भी कहते है।
जैसे :- हिंदी और तमिल विषम गोत्रीय भाषाएँ होती है। इसी प्रकार हिंदी और तेलगू विषम गोत्रीय भाषाएँ है। इस प्रकार आर्यकुल की भाषाओं को छोड़कर अन्य सब भाषाएँ विषम गोत्रीय भाषा है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

Page No.:
Date:

- देशी और विदेशी भाषाएँ :—

देश-विदेश की दृष्टि से भाषाओं में दो वर्ग किए जाते हैं :— देशी भाषाएँ और विदेशी भाषाएँ।

देशी भाषाएँ :— वे सब भाषाएँ जिनका जन्म एवं विकास किसी देश विशेष में हुआ है उस देश की देशी भाषाएँ कही जाती है। उदहारण के लिए हमारे देश मे अनेक भाषाओं का जन्म एवं विकास हुआ है जैसे :— संस्कृत पाली, अपभ्रंश, हिंदी, सिंधी, गुजराती, मराठी, उड़ीया, कश्मीरी, बंगाली, असमी, नेपाली, तेलगू, तमिल, कन्नड़, मलियालम आदि।

विदेशी भाषाएँ :— किसी देश की दृष्टि से वे सब भाषाएँ जिनका जन्म एवं विकास उस देश को छोड़कर अन्य किसी देश मे हुआ है उस देश के लिए विदेशी भाषाएँ होती है जैसे :— अरबी, ~~भार~~ फारसी, जर्मन, चीनी व अंग्रेजी आदि भाषाएँ हमारे देश की दृष्टि से विदेशी भाषाएँ है। इसी प्रकार ब्रिटेन के लिए हिंदी, कश्मीरी, पंजाबी, तेलगू, तमिल, जर्मन, फ्रैंच, रूसी व चीनी आदि भाषाएँ विदेशी भाषाएँ है।

→ भाषा एक साधन के रूप मे :—

भूमिका :— भाषा विचारो की अभिव्यक्ति का साधन है जो अनुकरण द्वारा अर्जित सम्पत्ति है बच्चा इसे अनुकरण द्वारा सीखता है वह उसकी मातृभाषा कहलाती है। वह अपनी माँ से ही नही अपितु परिवार के अन्य ~~स~~ सदस्यो से भी अनुकरण द्वारा ही सीखता है परिवार के बाद आसपास के परिवेश

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

के संपर्क में आकर अपने विचारों का आदान-प्रदान मौखिक और लिखित रूप में करता है। वह भी उसकी मातृभाषा ही कहलाती है। भाषा से ही वह विभिन्न शिक्षा द्वारा बच्चा आसानी से सीख लेता है। भाषा सभ्यता व संस्कृति के विकास में भी सहायक है।

① भाषा शिक्षा का सर्वश्रेष्ठ साधन है।
② ज्ञान की प्राप्ति का मुख्य साधन
③ राष्ट्र की एकता का आधार
④ सामाजिक जीवन में प्रगति का साधन
⑤ राष्ट्र संगानात्मक विकास और चिंतन का साधन
⑥ विचार-विनिमय का सरलतम साधन

① भाषा शिक्षा का सर्वश्रेष्ठ साधन :— विश्व के सभी शिक्षा शास्त्री तथा भाषा वैज्ञानिक इस बात से सहमत है कि शिक्षा का सर्वश्रेष्ठ माध्यम मातृ भाषा हो सकती है। उनकी मान्यता है कि जितनी सरलता और स्वभाविकता से मातृभाषा के माध्यम से बालक शिक्षा प्राप्त करता है किसी अन्य भाषा से नहीं। अन्य भाषाओं के माध्यम से भिन्न-२ विषयों को सीखने में अधिक समय तथा अधिक मानसिक शक्ति लगानी पड़ती है जबकि मातृभाषा से सीखे गए विषयों को सहज तथा स्थायी रूप से अर्जित कर सकते है।

② ज्ञान की प्राप्ति का मुख्य साधन :— भाषा के माध्यम से एक पीढ़ी समस्त संचित ज्ञान सामाजिक विरासत के रूप में दूसरी पीढ़ी को सौंपती है। भाषा के माध्यम से हम प्राचीन और नवीन, आत्मा तथा विश्व को पहचानने का सामर्थ्य प्राप्त करते है। भाषा के द्वारा ही व्यक्ति के

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

व्यक्तित्व का विकास होता है।

③ राष्ट्र की एकता का आधार :— संपूर्ण राष्ट्र के प्रशासन का संचालन भाषा के माध्यम से होता है। भाषा राष्ट्रीय एकता का मूल आधार है। इसके साथ-2 भाषा विभिन्न राष्ट्रों के बीच विचार-विनिमय, व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का साधन बनती है तथा सभी कार्यों को भाषा के द्वारा पूर्ण कर सकते हैं यदि भाषा न होती तो हम अपने कार्यों एवं विचारों का आदान-प्रदान किस प्रकार से कर पाते। भाषा के अभाव में विभिन्न राष्ट्रों के विद्वानों की विचारधाराएँ राष्ट्र तक सीमित रह जाती।

4) सामाजिक जीवन में प्रगति का साधन :-
भाषा समाज में सदस्यों को एक सूत्र में बाँधती है। भाषा के माध्यम से ही समाज प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता है। भाषा जितनी विकसित होगी समाज उतना ही विकासशील होगा। भाषा के माध्यम से समाज के नैतिक व्यापार ही संपन्न नहीं होते अपितु उसकी संस्कृति भी संपन्न होती है। यह भाषा ही है जिसके आधार पर विभिन्न क्षेत्रों, विभिन्न जातियों एवं धर्मों के लोग मिलजुलकर रहते हैं। वस्तुतः भाषा समाज को जोड़ने में सहायक है।

5) संज्ञानात्मकता विकास और चिंतन का साधन :-
जन्म के बाद बालक में संज्ञानात्मकता विकास के साथ-साथ

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

अधिगम

भूमिका :- अध्ययन प्रक्रिया का केंद्र बिंदु अधिगम है इस प्रक्रिया में शिक्षा जगत की सम्पूर्ण प्रक्रिया अधिगम पर आधारित है एक तरफ से जो कुछ हम शिक्षा और अधिगम प्रक्रिया द्वारा चाहते हैं और करते है वह सब अधिगम के लिए ही संभव है। इस दृष्टि से अधिगम की अवधारणा के विषय में ज्ञान प्राप्त करना या अधिगम के विषय में जानना आवश्यक है।

अधिगम का अर्थ :— अधिगम को शिक्षा, मनोविज्ञान का दिल कहा जाता है अधिगम का शिक्षा के क्षेत्र में विशेष स्थान बताया गया है क्योंकि शिक्षा का सर्वप्रथम उद्देश्य ही सीखना है हम सभी जानते है कि मनुष्य का जीवन जन्म से लेकर मृत्यु तक सीखना ही है। घर स्कूल और अपने आस-पास के वातावरण से मनुष्य कुछ न कुछ सीखता ही रहता है और अपना स्वरूपीय विकास करता है। आज हम देखते है कि सीखने की प्रक्रिया के द्वारा दुनिया बहुत छोटी सी हो गई है। विभिन्न प्रकार के अनुभवों की वजह से मनुष्य के स्वभाविक व्यवहार में जो परिवर्तन होता है। उस प्रक्रिया को अधिगम या सीखना कहते है उदाहरण के लिए :- जब कोई छोटा बच्चा जलती हुई दीयासलाई को हाथ लगाता है तो उसका हाथ जल जाता है उसे कड़ा अनुभव होता है दूसरी बार वह जलती हुई किसी भी वस्तु की तरफ हाथ बढ़ाने का साहस नही करेगा।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

परिभाषा :- पोल के अनुसार, "अधिगम व्यक्ति में एक परिवर्तन है, जो उसके वातावरण के परिस्थिति के अनुसार होता है।"

क्रो एण्ड क्रो के अनुसार, "सीखने के अंतर्गत आदते, ज्ञान तथा व्यवहार को ग्रहण करना शामिल है।"

गेट्स के अनुसार, "अनुभव के द्वारा व्यवहार में होने वाले परिवर्तन को सीखना या अधिगम कहते है।"

→ अधिगम का स्वरूप अथवा प्रकृति :-

① व्यवहारिक दृष्टिकोण :- व्यवहारवादियों का विचार है कि अधिगम अनुभव के परिणाम के तौर पर व्यवहार में परिवर्तन का नाम है। मनुष्य तथा दूसरे प्राणी वातावरण में प्रतिक्रिया करते है। बच्चा जन्म से ही अपने माता-पिता वातावरण से कुछ सीखने का प्रयत्न करता है।

② गैस्टालट दृष्टिकोण :- इस दृष्टिकोण के अनुसार अधिगम का आधार गैस्टालट ढाँचे पर निर्भर है अधिगम सम्पूर्ण स्थिति की सम्पूर्ण प्रतिक्रिया है।

③ हौरमिक दृष्टिकोण :- यह दृष्टिकोण मैकडूगल की देन है यह अधिगम के लक्ष्य केंद्रित स्वरूप पर जोर देता है। अधिगम लक्ष्य को सामने रखकर किया जाता है।

④ प्रयत्न तथा भूल दृष्टिकोण :- यह दृष्टिकोण थार्नडाईक की देन है उसने बिल्लियों, कुत्तों और मछलियों पर बहुत से प्रयोग करके यह निष्कर्ष निकाला की वे प्रयत्न व भूल से बहुत कुछ सीखते है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Page No.: Date:

③ **अधिगम का क्षेत्रीय दृष्टिकोण :—** कर्ट लीविन ने इस दृष्टिकोण को प्रतिपादित किया है उसने लिखा है, की अधिगम परिस्थिति का प्रत्यक्ष ज्ञान एवं संगठन है और सीखने मे प्रेरणा का महत्वपूर्ण हाथ है।

→ **अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक :—**

① अधिगम कर्ता से सम्बंधित कारक :—
② अध्यापक से सम्बंधित कारक
③ विषय-वस्तु से सम्बंधित कारक
④ पर्यावरण से सम्बंधित कारक

① **अधिगम कर्ता से सम्बंधित कारक :—**

a) **सीखने की इच्छा तथा आकांक्षा का स्तर :—** बच्चो को नए ज्ञान की ओर प्रवृत्त करने से पहले यह आवश्यक है कि उनमें सीखने के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न की जाए। क्योंकि जिज्ञासा उत्पन्न होने पर परिस्थितियो के प्रति प्रतिकूल होने पर बालक किसी भी चीज को आसानी से सीखने मेर सफल हो जाता है। सीखने की इच्छा के अलावा बच्चो का आकांक्षा स्तर भी उच्च कोटि का होना चाहिए जिससे बालक कठिन से कठिन ज्ञान को सरलता से सीख सकें।

b) **शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य :—** अधिगम से पहले बच्चे का शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रहना भी अत्यंत आवश्यक है क्योंकि बालक का ध्यान, रुचि एवं निरमितता पर

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

इसका निश्चित बड़ा प्रभाव पड़ता है। किसी भी प्रकार की मानसिक विकृति, शारीरिक तथा मानसिक तनाव का प्रत्यक्ष प्रभाव बालक के अधिगम पर प्रतिकूल पड़ता है। शारीरिक एवं मानसिक रूप से अस्वस्थ बालक शीघ्र ही थक जाते हैं।

c) कार्य का समय व थकान :— अधिगम का समय सीखने की क्रिया से प्रभावित होता है है। प्रातः के समय छात्र जिस उत्साह व तत्परता से सीखते हैं उतना दोपहर बाद के पीरियड में नहीं। अतः विद्यालयों में पीरियड (कालांश) की व्यवस्था इस प्रकार की जानी चाहिए जिससे छात्र छात्राओं को पर्याप्त विश्राम मिलना चाहिए और समस्त कालांशों में समान रूप से परिश्रम करते लगें।

d) परिपक्वता :— छात्रों को अधिगम कराने से पहले यह ध्यान रखना आवश्यक है कि निर्धारित पाठ्यक्रम या क्रियाएँ छात्र-छात्राओं के स्तर, आयु के अनुकूल है या नहीं। इसके अतिरिक्त मानसिक एवं शारीरिक दृष्टि से छात्र-छात्राओं का परिपक्व न होना बालक को समुचित रूप से अधिगम नहीं करा सकता जिसे शिक्षक की क्षमता एवं समय बेकार हो जाता है।

e) अधिगम विधि :- सीखने की प्रक्रिया में विधि सीखने को अत्यधिक प्रभावित करती है। उपयुक्त विधि के माध्यम से बच्चों को अधिगम कराया जा सकता है। यदि चयन की गई अधिगम विधि बच्चों के स्तर के अनुकूल तथा रुचिगत नहीं है तो ऐसी स्थिति में सीखना अत्यंत कठिन एवं नीरस हो जाता है। अतः बच्चों को सक्रिय रखने वाली रुचिगत अधिगम विधियों का चयन शिक्षकों को करना

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

5

चाहिए। क्योंकि ऐसी विधि अत्यधिक प्रभावशाली होती है।

f) अभिप्रेरणा :- स्टीफन के शब्दो में, "अध्यापक के पास जितने भी साधन उपलब्ध है उनमें अभिप्रेरणा संभवत सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। अभिप्रेरणा द्वारा ही सीखने की गति को तेज किया जा सकता है। प्रेरणा प्राप्त होने पर बालक उत्साहित होकर रुचि पूर्वक सीखते है तथा व इसके द्वारा जटिल से जटिल पाठ को सहज और रुचिगत बनाया जा सकता है अतः शिक्षक को विभिन्न प्रकार के प्रेरको का प्रयोग यथासंभव करना चाहिए।

g) वंशानुक्रम :— बालको मे निहित अनेक गुण एवं क्षमताऐं उनके वंशानुक्रम की देन होती है अतः बालको के अधिगम पर वंशानुक्रम की विशेषताओ का गहरा प्रभाव पड़ता है।

h) विद्यालय का अच्छा वातावरण :— बच्चो की सीखने की प्रक्रिया पर विद्यालय के वातावरण का गहरा प्रभाव पड़ता है यदि विद्यालय का वातावरण सहज और शांत है तो बालक अपने ध्यान को पाठ पर शीघ्र ही केंद्रित कर लेता है। इसके अतिरिक्त कक्षा मे बैठने की सही व्यवस्था, प्रकाश एवं वायु का सीखने पर प्रभाव पड़ता है। इसके साथ ही विद्यालय मे पुस्तको, शिक्षक सामग्री इत्यादि की भी समुचित व्यवस्था होनी चाहिए क्योंकि इनका भी बच्चों के अधिगम पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

i) बुद्धि :— बच्चो के सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक बुद्धि है तीव्र बुद्धि बालक, मंद बुद्धि बालक की तुलना में किसी भी कार्य को जल्दी सीख जाता है। बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कुछ स्तर का सकारात्मक सहसम्बंध पाया जाता है।

j) अभ्यास एवं प्रशिक्षण :- छात्र-छात्राओं को अभ्यास हेतु कार्य दिए जाने पर ही अधिगम की प्रक्रिया में विकास होता है अधिगम में बालक को प्रशिक्षण प्रदान किए जाने पर वह किसी कार्य को अति शीघ्र सीख जाते है अत बालको को अधिक से अधिक अभ्यास कराया जाना चाहिए किंतु अभ्यास इतना अधिक भी न हो की बालक को उससे अरुचि हो जाए।

② अध्यापक से सम्बंधित कारक :—

① बाल केंद्रित शिक्षा पर बल :— आज बाल केंद्रित शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया जा रहा है। अत शिक्षक के लिए ह यह आवश्यक है कि वह छात्रों को जो भी ज्ञान प्रदान करे वह उनकी रुचि व स्तर के अनुकूल होना चाहिए।

② विषय का ज्ञान :- कोई भी अध्यापक अपने छात्रो को अपने विषय का पूर्ण ज्ञान होने पर ही प्रभावित कर सकता है। विषय का पूर्ण ज्ञान होने पर अध्यापक आत्म-विश्वास पूर्वक बच्चो को नवीन ज्ञान प्रदान करते हुए उनके मस्तिष्क का विकास कर सकता है।

③ मनोविज्ञान एवं बाल प्रकृति का ज्ञान :- अध्यापक को शिक्षण

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

से सम्बंधित मनोविज्ञान की विभिन्न शाखाओं का ज्ञान होना आवश्यक है। मनोविज्ञान का ज्ञान होने पर ही अध्यापक अपने शिक्षण को सफल बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षण को बालक की प्रकृति का ज्ञान भी होना चाहिए।

④ शिक्षण पद्धति :— अधिगम प्रक्रिया से शिक्षण पद्धति का प्रत्यक्ष सम्बंध होता है। समस्त बालकों को एक ही शिक्षण विधि से नहीं पढ़ाया जा सकता। क्योंकि प्रत्येक छात्र दूसरे छात्र से भिन्न होता है। अतः शिक्षक द्वारा प्रयुक्त की जाने वाली शिक्षण पद्धति अधिक प्रभावी व मनोवैज्ञानिक होनी चाहिए तभी अधिगम की प्रक्रिया सफल हो सकती है।

⑤ व्यक्तिगत विभिन्नताओं का प्रकार :— अध्यापक को व्यक्तिगत विभिन्नताओं के बारे में ज्ञान होना आवश्यक है। मनोविज्ञान के प्रभाव के परिणाम स्वरूप आज के क्षेत्र में व्यक्तिगत विभिन्नताओं को महत्व प्रदान किया जा रहा है, इसलिए आज बालक में रुचि, अभिरुचि, योग्यता, क्षमता आदि को ध्यान में रखकर उन्हें शिक्षा प्रदान की जाती है। व्यक्तिगत विभिन्नताओं का ज्ञान होने पर ही शिक्षक अपने शिक्षण को सफल बना सकता।

⑥ व्यक्तित्व :— शिक्षक का व्यक्तित्व सफल शिक्षण का आधार होता है। उत्तम शिक्षक का व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है। प्रभावी व्यक्तित्व का अर्थ यह है कि उत्तम अध्यापक आत्मविश्वासी एवं दृढ़ इच्छाशक्ति वाला, चरित्रवान, कर्तव्यनिष्ठ एवं निरोगी होता है। उसके गुणों एवं आदतों का प्रभाव बालकों पर इतना अधिक पड़ता है

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

कि उसकी समग्र रुचियाँ एवं अभिरुचियाँ ही बालको की रुचियाँ या अभिरुचियाँ बन जाती है

(7) पढ़ाने की इच्छा :- पाठ को पढ़ाने की इच्छा होने पर ही शिक्षक किसी पाठ को रुचिपूर्वक पढ़ा सकता है और छात्रों में भी पढ़ने के प्रति रुचि विकसित कर सकता है।

(8) व्यवसाय के प्रति निष्ठा :- व्यवसाय के प्रति निष्ठा भी अधिगम को प्रभावित करती है और विषय में रुचि उत्पन्न करती है। अतः शिक्षक को अपना कार्य उत्साह व तत्परता से करना चाहिए।

(9) शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य :- शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से स्वस्थ होने पर ही शिक्षक बालकों को ध्यान केंद्रित करवाकर प्रभावशाली ढंग से शिक्षा प्रदान कर सकता है

(10) अध्यापक का व्यवहार :- यदि शिक्षक का व्यवहार समस्त छात्र-छात्राओं के प्रति समान है। प्रेम, सहयोग, सहानुभूति आदि गुणों से युक्त है तो छात्र भली प्रकार से सीख लेंगे। इसके विपरीत शिक्षक का व्यवहार होने पर छात्रों की शिक्षक के प्रति गलत धारणा बन जाएगी जो अधिगम में अत्यंत बाधक सिद्ध होगी। इसके अलावा अन्य कारण भी हैं जो सीखने को प्रभावित करते हैं जैसे :- वातावरण का ज्ञान, पाठ्य योजना, पाठ्यसहगामी क्रियाओं का आयोजन, अनुशासन आदि।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

(3) विषय-वस्तु से संबंधित कारक :-

i) विषय-वस्तु का रुचिकर होना :- विषय वस्तु रुचिकर होने पर छात्र मन लगाकर पढ़ते हैं। इसके विपरीत यदि विषय वस्तु अरुचिकर है तो छात्र पढ़ने में रुचि नहीं लेते परिणाम स्वरूप अधिगम की प्रक्रिया सफल नहीं हो पाती।

ii) विषय-वस्तु की प्रकृति एवं आकार :- विषयवस्तु की प्रकृति एवं आकार का अधिगम प्रक्रिया पर गहरा प्रभाव पड़ता है। विषयवस्तु के कठिन होने पर बच्चों को अधिगम में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसके विपरीत यदि विषयवस्तु सरल है तो उसे बालक सहजता के साथ सीख लेता है। छोटे अध्यायों को बालक बड़े अध्यायों की अपेक्षा कम समय में याद कर लेते हैं।

iii) भाषा-शैली :- सीखने की प्रक्रिया में भाषा-शैली का महत्वपूर्ण योगदान होता है। सरल भाषा अधिगम में सहायक सिद्ध होती है और कठिन शब्दों का प्रयोग एवं लंबे वाक्य अधिगम में परेशानी उत्पन्न करते हैं।

iv) विभिन्न विषयों का कठिनाई स्तर :- विषयवस्तु से संबंधित अधिगम को प्रभावित करने वाला यह भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण कारक है। प्रत्येक विषय का कठिनाई स्तर अलग होता है। इसमें सभी विद्यार्थी समान रूप से किसी विषय को समझ नहीं पाते।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

iii) विषयवस्तु की उद्देश्यपूर्णता एवं प्रस्तुतीकरण का क्रम :— सीखी जाने वाली विषयवस्तु उद्देश्यपूर्ण होने पर बालक उसे सहजता से सीख लेते है। सबल से जटिल की ओर शिक्षण सूत्र का प्रयोग करके यदि विषयवस्तु को प्रस्तुत किया जाता है तो छात्र स्वतः ही कठिन विषयवस्तु को भी सरलता से सीख लेते है।

iv) शिक्षण सामग्री का उपयोग :— शिक्षण को रुचिकर बनाने के लिए शिक्षण सामग्री के महत्व को नकारा नही जा सकता। शिक्षण सामग्री की सहायता से जटिल से जटिल पाठ को सरलता से पढाया जा सकता है।

(v) पर्यावरण से संबंधित कारक :—
अधिगम पर प्रभाव डालने वाले वातावरण से संबंधित प्रमुख कारक इस प्रकार से है :—

① सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण :— विद्यालय विद्यार्थियों के अधिगम पर उनके सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है। प्रायः सांस्कृतिक वातावरण का अभिप्राय व्यक्ति द्वारा नियमित या प्रभावित उन समस्त नियमों, विचारों एवं भौतिक वस्तुओं से है जो पूर्ण रूप से चारों तरफ से जीवन को घेरे हुए है। सांस्कृतिक वातावरण मानव द्वारा नियमित होते हुए भी मानवीयता एवं सामाजिक विकास तथा बालक के अधिगम को सबसे अधिक प्रभावित करते है।

② भौतिक वातावरण :— भौतिक वातावरण के अंतर्गत तापमान, प्रकाश, वायु, शोर इत्यादि का प्रमुख स्थान

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

है। कक्षा का भौतिक वातावरण उपयुक्त न होने पर छात्र भी असहज अनुभव करने लगते है और सीखने में उनकी अरुचि उत्पन्न होने लगती है।

iii) पारिवारिक वातावरण :— पारिवारिक वातावरण का बालक के अधिगम में महत्वपूर्ण स्थान होता है जिन परिवारों का वातावरण उत्तम होता है उन परिवारों के बच्चों में पढाई के प्रति रुचि होती है और कठिन से कठिन अध्याय को भी वो बच्चे सरलता से सीख लेते है। इसके विपरीत जिन परिवारों का पारिवारिक वातावरण अच्छा नहीं होता उन परिवारों के बच्चों की अधिगम की गति अत्यधिक मंद होती है।

iv) मनोवैज्ञानिक वातावरण :— अधिगम की प्रक्रिया में मनोवैज्ञानिक वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है यदि छात्रों में परस्पर सहयोग, सद्भाव, मधुर, संबंध है तो अधिगम की प्रक्रिया सुचारु रूप से आगे बढ़ती है।

v) शिक्षा के औपचारिक साधन :— शिक्षा के साधनों मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं। औपचारिक साधन और अनौपचारिक साधन। अनौपचारिक साधनों में समान रूप से रेडियो, टेलिविजन, पुस्तकालय, वाचनालय आदि साधनों का बालकों के अधिगम पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

⇒ निष्कर्ष :—

उपरोक्त विवरण से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे है सीखना एक विस्तृत और व्यापक मानसिक प्रक्रिया है इसमें निरंतरता का गुण पाया जाता है और विभिन्न

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

स्तरों से गुजरकर यह क्रिया संपन्न होती है। सीखने के पूर्व सीखने की उत्कृष्ट इच्छा जाग्रत होना ही अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है। इस दृष्टि से स्मीथ द्वारा सुझाए गए तीन स्तर सीखने में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। बच्चे को जो कुछ भी सिखाया जाए उससे पहले उसमें सीखने की तीव्र अभिलाषा या अभिप्रेरणा उत्पन्न कर देना सीखने की प्रक्रिया का एक बहुत आवश्यक तत्व है। जिसकी ओर माता-पिता तथा अध्यापक को पूरा ध्यान देना चाहिए। अधिगम की उपरोक्त कारक मनोवैज्ञानिक पर आधारित है। इनका प्रभाव बालक पर आंतरिक व बाहरी रूप से पड़ता है।

⟹ अधिगम के स्तर :—

भूमिका :— अधिगम प्रक्रिया का केंद्र बिंदु अधिगम है। इस प्रक्रिया में शिक्षा जगत की संपूर्ण प्रक्रिया अधिगम पर आधारित है। इस तरफ ये जो कुछ हम शिक्षा और अधिगम प्रक्रिया द्वारा चाहते हैं और करते हैं वह सब अधिगम के लिए ही संभव है। इस दृष्टि से अधिगम की अवधारणा व अधिगम के स्तर के विषय में जानना आवश्यक है। सीखने की प्रक्रिया मनुष्य के जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक निरंतर चलती रहती है। मनुष्य अपने सीखे गए ज्ञान एवं कौशल के आधार पर नए-नए तथ्यों की खोज करता है सीखने की इस क्रिया को तीन स्तरों में विभाजित किया गया वे स्तर हैं :—

① स्मृति स्तर
② चिंतन स्तर
③ बोध स्तर

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(1) स्मृति स्तर :- किसी वस्तु, क्रिया अथवा तथ्य का ज्ञान बिना सोचे समझे प्राप्त करते है तो इस प्रकार के सीखने के स्तर को स्मृति स्तर कहते है क्योंकि इस प्रकार सीखने में मनुष्य विचार नही करता इसलिए विचारहीन सीखना भी कहते है। स्मृति की चार प्रक्रिया है :-
ग्रहण, धारणा, प्रत्यास्मरण, पहचानना।

सीखने वाला सर्वप्रथम किसी वस्तु, क्रिया या तथ्य का ज्ञान अपनी ज्ञानेन्द्रियो द्वारा करता है यह प्रक्रिया सीखने वाले के मन मे संचित हो जाती है। इसे ग्रहण कहते है। वस्तु क्रिया अथवा तथ्य से संबंधित इन चिन्हो को मस्तिष्क मे बनाए रखना धारणा कहलाता है। इस प्रकार धारण किए गए अनुभवों को पुनः चेतन मन पर लाने और उन्हे प्रकट करने को प्रत्यासमरण कहते है और इन्ही अनुभवो को जोड़ने और समझने को अभिव्यक्त करने को पहचान कहते है। इस प्रकार सीखने की उपरोक्त चार प्रक्रियाएं जितने सहयोग मे होती है उसका स्मृति स्तर का सीखना उतना अच्छा होता है प्रारंभ मे प्रायः बच्चे इसी स्मृति स्तर से सीखना प्रारंभ करते है।

(2) चिंतन स्तर :- किसी गहरे तथ्य को समझने के लिए जब चिंतन करना पड़ता है तो इस प्रकार के सीखने को चिंतन स्तर कहते है यह बोध स्तर के चिंतन मे भी करना पड़ता है परंतु जब गहरे विचार करने पड़े तो उसे चिंतन सीखना होता है क्योंकि इस स्तर के सीखने मे विचारो का परिणाम महत्वपूर्ण होता है। इसलिए इसे चिंतन स्तर का सीखना कहते है। चिंतन स्तर पर प्रायः समस्या केंद्रित सीखना भी शामिल है। चिंतन स्तर के सीखने वाला अपने दोनो स्तरो के सीखे गए ज्ञान एवं कौशल का प्रयोग करता है इसलिए इस स्तर का सीखना इस बात पर निर्भर

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

करता है कि सीखने वाले का तत्व संबंधी पूर्व ज्ञान कितना स्पष्ट है इस प्रकार सीखने वाला स्वयं करके स्वयं सीखता है और तर्क के आधार पर भी सीखता है यह उत्तम स्तर का सीखना होता है इस प्रकार का सीखा हुआ ज्ञान एवं कौशल स्थाई होता है क्योंकि यह जीवन की समस्याओं के समाधान नए सृजन एवं नई-नई खोजों का आधार होता है

③ बोध स्तर :— किसी वस्तु, क्रिया अथवा तथ्य का ज्ञान सोच-समझकर प्राप्त करना बोध स्तर कहलाता है। इस प्रकार के सीखने में मनुष्य बुद्धि का प्रयोग करता है और विचार करता है। इसलिए इसे विचारपूर्ण सीखना भी कहते हैं। किसी व्यक्ति को किसी तथ्य का बोध हो गया है तो यह इस बात से पता लगता है कि वह उससे मिलते-जुलते तथ्यों से उसका विभेद कर सके। सीखने वाला सीखे जाने वाली वस्तु क्रिया अथवा तथ्य को अपने पूर्व ज्ञान के आधार पर सब समझने का प्रयत्न करता है। वह सीखे जाने वाली वस्तु क्रिया अथवा तथ्य का विश्लेषण करता है तथा नई परिस्थितियों में सही ढंग से प्रयोग करता है। सीखने वाला व्यक्ति इस स्तर को जितने सही ढंग से सीखता है उसका बोध का स्तर उतने ही उच्च स्तर का सीखने होता है। इस स्तर के सीखने में सीखने वाले को विचारपूर्ण मानसिक क्रियाएँ करनी होती है। वह अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर नए ज्ञान को प्राप्त करता है। इसलिए यह स्मृति स्तर के सीखने से उत्तम स्तर का सीखना होता है। इस प्रकार से सीखा हुआ ज्ञान समय के अंतराल

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

और उपयोग के अभाव मे बहुत समय तक स्मर्णा रहता है और कुछ तो जीवन भर स्मर्ण रहता है।

निष्कर्ष :-

सीखने की प्रक्रिया में किसी न किसी प्रकार की रुकावट, कठिनाई या बाधा सामने आ जाती है। यही बाधा और कठिनाई उसे कुछ सीखने को प्रेरित करती है। अगर लक्ष्य की प्राप्ति में किसी प्रकार की कठिनाई या बाधा सामने आ जाती है, तो व्यक्ति अपने व्यवहार, नवीन ज्ञान और कौशल के माध्यम से उसको हल कर लेता है। माना एक विद्यार्थी अपना नाम कॉलेज की हॉकी टीम में शामिल कराना चाहता है। हॉकी एक ऐसा खेल है जिसे खेलने से उसकी बहुत सी मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है इसके द्वारा अपने सहपाठियों तथा अध्यापकों की दृष्टि में उसका मूल्य बढता है व उसकी रुचि व अभिरुचि के अनुकूल उसे खेलने का अवसर मिलता है। यह सभी वह अपने अधिगम के स्तरों के प्रभावशाली कारण के कारण कर पाता है।

=> अधिगम के नियम :-

भूमिका :-

अधिगम या सीखने के नियमों का प्रतिपादन प्रयोग के आधार पर ई० एल० थार्नडाइक ने किया है जो अमेरिका के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक हुए हैं जिसने सीखने के उस नियमो की खोज की। जिन्हे

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

निम्नलिखित दो भागों में विभाजित किया गया है:-
1. मुख्य नियम
2. गौण नियम

1. मुख्य नियम :- सीखने के मुख्य तीन नियम इस प्रकार से है:-

(i) तत्परता का नियम :- इस नियम के अनुसार जब व्यक्ति किसी कार्य को करने के लिए पहले से तैयार रहता है तो वह कार्य उसे आनंद देता है एवं शीघ्र ही उसे सीख लेता है। इसके विपरीत जब व्यक्ति कार्य करने के लिए तैयार नहीं रहता या सीखने की इच्छा नहीं होती तो वह झुंझला जाता है व क्रोधित हो जाता है व सीखने की गति धीमी होती है।

(ii) अभ्यास का नियम :- इस नियम के अनुसार व्यक्ति जिस क्रिया को बार-बार करता है उसे शीघ्र ही सीख जाता है तथा जिस क्रिया को छोड़ देते है या बहुत समय तक नहीं करते उसे वह भूलने लगता है। जैसे:- गणित के प्रश्नों को हल करना, साइकिल चलाना, टाइप करना आदि इन्हें उपयोग तथा उपयोग का नियम भी कहते है।

(iii) प्रभाव का नियम :- इस नियम के अनुसार जीवन में जिस कार्य को करने पर व्यक्ति पर अच्छा प्रभाव पड़ता है या सुख या संतोष मिलता

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

है तो उन्हें वह सीखने का प्रयत्न करता है एवं जिन कार्यों को करने पर व्यक्ति पर बुरा प्रभाव पड़ता है उन्हें वह करना छोड़ देता है इस नियम को सुख तथा दुख या पुरस्कार तथा दंड का नियम भी कहा जाता है।

2. गौण नियम :-

सीखना चारों ओर के परिवेश के अनुकूलन में सहायता करता है किसी विशिष्ट सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश में कुछ समय रहने के पश्चात हम उस समाज के नियमों को समझ जाते हैं और यही हमसे अपेक्षित भी होता है। परिवार, समाज और अपने कार्यक्षेत्र के जिम्मेदार नागरिक एवं सदस्य बन जाते हैं।

i) बहु-अनुक्रिया नियम :— इस नियम के अनुसार व्यक्ति के सामने किसी नई समस्या के आने पर उसे सुलझाने के लिए वह विभिन्न प्रतिक्रियाओं के हल ढूंढने का प्रयत्न करता है वह प्रतिक्रियाएँ तब तक करता रहता है जब तक समस्या का सही हल न खोज ले और उसकी समस्या सुलझ नहीं जाती। उससे उसे संतोष मिलता है और थार्नडाईक का प्रयत्न एवं भूल द्वारा सीखने का सिद्धांत इसी नियम पर आधारित है।

ii) मानसिक स्थिति या मनोवृत्ति का नियम :— इस नियम के अनुसार जब आदमी सीखने के लिए मानसिक रूप से तैयार रहता है तो वह शीघ्र ही सीख लेता है। इसके विपरीत

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner